Department of Economics

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

(a constitueant unit of B.R.A. University, Muzaffarpur (Bihar)

NAAC Accredited 'B+'

Topic : फर्म का सन्तुलन [EQUILIBRIUM OF FIRM]

BA Economics Part I MJC/MIC/MDC (Semester I)

Instructor

Dr. Ram Prawesh

Guest Faculty (Department of Economics)

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

फर्म का सन्तुलन [EQUILIBRIUM OF FIRM]

फर्म के सन्तुलन का अर्थ (Meaning of Firm's Equilibrium)

एक फर्म (या उत्पादक) उस समय सन्तुलन की स्थिति में होती है जब वह अपने वर्तमान उत्पादन की मात्रा से सन्तुष्ट होती है। उत्पादन में कमी करने की या वृद्धि करने की उसमें कोई भी प्रवृत्ति नहीं पाई जाती है। यह अवस्था उस समय होगी जब या तो फर्म को अधिकतम लाभ प्राप्त होंगे या फर्म को होने वाली हानि न्यूनतम होगी।

दूसरे शब्दों में, एक फर्म साम्य की स्थिति में तब कही जायेगी, जबकि उसके कुल उत्पादन की मात्रा में परिवर्तन की कोई प्रवृत्ति (Tendency) नहीं हो अर्थात् साम्यावस्था में फर्म उत्पादन की वह मात्रा तथा व कीमत निश्चित करेगी जिस पर उसको 'अधिकतम लाभ' या 'अधिकतम शुद्ध आय' (Maximum Profit or Maximum Net Revenue) प्राप्त हो।

फर्म के सन्तुलन की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नलिखित हैं :

1. प्रो. वाटसन के अनुसार, "फर्म वह इकाई है जो लाभ प्राप्त करने की दृष्टि से बिक्री के लिए उत्पादन करती है। इसका उद्देश्य लाभ को अधिकतम करना होता है।"

2. प्रो. हेन्सन के अनुसार, "एक फर्म उस समय सन्तुलन में होगी जब उत्पादन में कमी करना या वृद्धि करना उसके लिए लाभकारी नहीं होगा।"

संक्षेप में, फर्म के साम्य की अवस्था की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं :

(1) साम्य का अर्थ परिवर्तन का अनुपस्थित होना है अर्थात् इस स्थिति में फर्म अपनी कीमत या उत्पादन की मात्रा में किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं करना चाहती।

(2) फर्म परिवर्तनहीनता की स्थिति में उस समय पहुँचती है, जबकि उसे अधिकतम लाभ प्राप्त होता है।

दो रीतियाँ: फर्म का साम्य एवं साम्य शर्तें (Two Approaches: Equilibrium of Firm & Equilibrium Conditions)

(A) कुल आगम एवं कुल लागत वक्र रीति (Total Revenue & Total Cost Curve Approach), (B) सीमान्त आगम एवं सीमान्त लागत वक्र रीति (Marginal Revenue & Marginal Cost Curve Approach)|

(A) फर्म का साम्य : कुल आगम एवं कुल लागत वक्र रीति (TR & TC Approach) इस रीति में उत्पादन के विभिन्न स्तरों पर कुल आगम व कुल लागत का अन्तर मालूम करते हैं। कुल आगम की कुल लागत पर अधिकता लाभ कहलाती है। यदि कुल आगम कुल लागत से कम है तो हानि होती है।

कुल लाभ = कुल आगम - कुल लागत। (Total Profit = Total Revenue - Total Cost)